**विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय**

**कक्षा – सप्तम** **दिनांक -07-08-2021**

**विषय -हिन्दी** **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

**एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित**

**सुप्रभात बच्चों आज सूरदास के पद नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे**

**कहन लागे मोहन मैया मैया।**
**नंद महर सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया॥**
**ऊंच चढ़ि चढ़ि कहति जशोदा लै लै नाम कन्हैया।**
**दूरि खेलन जनि जाहु लाला रे! मारैगी काहू की गैया॥**
**गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर बजति बधैया।**
**सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों चरननि की बलि जैया॥**

**भावार्थ: सूरदास जी का यह पद राग देव गंधार में आबद्ध है। भगवान् बालकृष्ण मैया, बाबा और भैया कहने लगे हैं। सूरदास कहते हैं कि अब श्रीकृष्ण मुख से यशोदा को मैया-मैया नंदबाबा को बाबा-बाबा व बलराम को भैया कहकर पुकारने लगे हैं। इना ही नहीं अब वह नटखट भी हो गए हैं, तभी तो यशोदा ऊंची होकर अर्थात् कन्हैया जब दूर चले जाते हैं तब उचक-उचककर कन्हैया को नाम लेकर पुकारती हैं और कहती हैं कि लल्ला गाय तुझे मारेगी। सूरदास कहते हैं कि गोपियों व ग्वालों को श्रीकृष्ण की लीलाएं देखकर अचरज होता है। श्रीकृष्ण अभी छोटे ही हैं और लीलाएं भी उनकी अनोखी हैं। इन लीलाओं को देखकर ही सब लोग बधाइयां दे रहे हैं। सूरदास कहते हैं कि हे प्रभु! आपके इस रूप के चरणों की मैं बलिहारी जाता हूँ।**

**मैया ! हौं गाइ चरावन जैहौं ।**
**तू कहि महर नंद बाबा सौं, बड़ौ भयौ न डरैहौं ॥**
**रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहि रैहौं ।**
**बंसीबट तर ग्वालनि कैं सँग, खेलत अति सुख पैहौं ॥**
**ओदन भोजन दै दधि काँवरि, भूख लगे तैं खेहौं ।**
**सूरदास है साखि जमुन-जल सौंह देहु जु नहैहौं ॥**

**भावार्थ :-- (श्यामसुन्दर कहते हैं-)`मैया ! मैं गाय चराने जाऊँगा। तू व्रजराज नन्दबाबा से कह दे- अब मैं बड़ा हो गया, डरूँगा नहीं, रैता पैता, मना ,मनसुखा आदि सखाओं तथा दाऊ दादा के साथ ही रहूँगा । वंशीवट के**

**नीचे गोप-बालकों के साथ खेलने में मुझे अत्यन्त सुख मिलेगा । भोजन के लिये छींके में भात और दही दे दे, भूख लगने पर खा लूँगा ।' सूरदास जी कहते हैं कि `यमुनाजल मेरा साक्षी है, शपथ दे दो यदि मैं वहाँ स्नान करूँ तो ।'**